इकाई 3 संरचनावाद*

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 क्लाउडो लेवी स्ट्रॉस तथा संरचनावाद

3.3 लेवी स्ट्रॉस के अनुसार संस्कृति की अवधारणा

3.4 मिथकों का संरचनात्मक विश्लेषण

3.5 नृवंश विज्ञान तथा संरचनात्मक विश्लेषण

3.6 समीक्षा

3.7 सारांश

3.8 संदर्भ ग्रंथ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में छात्र पढ़ेंगे :

- संरचनावाद की अवधारणा तथा उसके संस्थापक;
- सत्रीकरण का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य;
- मिथक व सामाजिक संस्थानों के विश्लेषण में संरचनावाद की उपयोगिता;
- संरचनात्मक दृष्टिकोण का व्यापक उपयोग; तथा
- संरचनात्मक दृष्टिकोण की समीक्षाएँ।

3.1 प्रस्तावना

संरचनावाद में सामाजिक संरचना ध्वनित होती है। दोनों के बीच घनिष्ठ सम्बंध है, परन्तु सैद्धांतिक दृष्टि से संरचनावाद संरचना तथा क्रियात्मक सिद्धांत से मेल नहीं खाता क्योंकि संरचनावाद की पद्धति तथा दार्शनिक मान्यताएं इन दोनों से भिन्न हैं तथा इनके बुनियादी परिसर भी संरचनावाद से मेल नहीं खाते।

सामाजिक संरचना की धारणा मूलतः समाज में रहने वाले व्यक्तियों के आपसी सम्बंधों का निरीक्षण एवं विश्लेषण करती है। जबकि संरचनावाद संस्कृति द्वारा धारणाओं को दिये जाने वाले नामों व विचारों के सम्बंधों का विश्लेषण करता है। संरचनावाद की भूमिकाएं काल्पनिक मामलों में सामाजिक संरचना की भूमिकाओं की तुलना में उच्च स्तर की होती है। दूसरे शब्दों में समाजशास्त्री दर्खाइम तथा उनके अनुयायी ए आर रेडक्लिफ-ब्राऊन ने सामाजिक सम्बंधों से जुड़े व्यवहारों तथा पद्धतियों की व्याख्याएं की हैं, जबकि संरचनावाद ने मानव-मस्तिष्क के सभी समस्त ढांचों का अध्ययन किया है क्योंकि मस्तिष्क सभी मनुष्यों में आवश्यक रूप से मौजूद रहता है, अतः ढांचागत अथवा संरचनात्मक विश्लेषण आदर्श रूप से संदर्भ रहित होते हैं। संरचनात्मक-क्रियात्मक विश्लेषणों से यह एक दम भिन्न होते हैं। संरचनात्मक क्रियात्मक विश्लेषण विशेष रूप से उस समाज व संस्कृति के संदर्भ में होते हैं जिसके आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है।

*यह इकाई प्रो. सुभद्रा चन्ना के द्वारा लिखी गई है।

लेवी स्ट्रॉस के अनुसार किसी भी मिथक का संरचनात्मक विश्लेषण पूरी तरह उस संस्कृति के संदर्भ से मुक्त होता है। जिसमें यह (मिथक) अवस्थित होता है। इस प्रकार जहां संरचनात्मक प्रक्रियावाद सम्पूर्णतावादी निधियों तथा पूरी संस्कृति के समग्र विश्लेषण में विश्वास रखता है, वही संरचनावाद संस्कृति के अलग-थलग पड़े कुछ अंशों का विश्लेषण करता है तथा उसकी पहुँच अधिक सामान्य व सापेक्ष (तुलनात्मक) होती है।

ज्यों-ज्यों हम इसकी व्याख्या आगे बढ़ाते है त्यों-त्यों आपको सामाजिक संरचना तथा संरचनावाद में और भी अनेक प्रकार के अंतर तथा विरोधाभास दिखाई पड़ेंगे।

3.2 क्लाउडो लैवी-स्ट्रॉस तथा संरचनावाद

संचनावाद की अवधारणा तथा उसकी पद्धति को स्थापित करने का श्रेय फ्रांसीसी दार्शनिक तथा मानव-विज्ञानी क्लाइड लैवी-स्ट्रॉस की है। वे समाज को अन्य अनके समाजविज्ञानियों की तरह सम्बंधों का जाल मात्र नहीं मानते परन्तु मनुष्यों के बीच आदान-प्रदान की आवश्यकता पर आधारित मानते हैं। विवाह के लिए स्त्रियों का आदान-प्रदान समाज की आधारभूत व्यवस्था है। संरचनावाद मनुष्यों के मस्तिष्क की संरचना तथा उसका सामाजिक संरचना व गतिविधियों में इस्तेमाल की केंद्र में रखकर काम करता हैं संरचनावा यह बताता है कि किस प्रकार मनुष्य संसार में जीवन को सार्थक बनाने के लिए द्विधारी पद्धति का इस्तेमाल करता है।

लैवी-स्ट्रॉस जब संरचना की बात करता है, तब वह मात्र प्रकट संरचनाओं की बात नहीं करता है जो सतह पर दिखाई देती है, जिस तरह ए आर रेडक्लिफ ब्राऊन सम्बंधों के युग्म की बात करता है। परन्तु वह मानक के अंदर मौजूद उन गहरे व अचेतन तार्किक संरचनाओं की बात करता है जो प्रकट संरचनाओं के नीचे अविस्थत होते हैं। ये संरचनाएं वैचारिक होती हैं तथा अदृश्य होती हैं आम तौर पर लोग इन्हें समझ तक नहीं पाते। केवल विश्लेषक ही इन्हें समझते हैं और इनकी व्याख्या करते हैं।

इस प्रकार संरचनावाद एक सकारात्मक पहल है। यह समाज को तर्क आधारित संरचना मानता है, संरचनावाद मनोविज्ञान तथा भाषा विज्ञान दोनों को महत्व देता है। मनोविज्ञान के संदर्भ में संरचनावाद पार-सांस्कृतिक मनोविज्ञान की बात नहीं करता जैसे सामान्यतः अनेक समाजशास्त्री करते हैं। वह अचेतन से जुड़ी ठोस प्रत्यक्षतावादी मनोविज्ञान की बात करता है। जो वैश्विक मस्तिष्क से सीधा जुड़ा होता है। इसी तरह भाषा विज्ञान के संदर्भ में यह केवल कथन की बात नहीं करता, वह भाषा की औपचारिक विशेषताओं की बात करता है। भाषा के व्याकरण सम्मत् स्वरूप की बात करता है। यहां लैवी स्ट्रास फरदीनंद डी सॉसर (Ferdinand de saussure) के भाषाई संरचनावाद से सीधा सीधा प्रभावित लगता है। फरदीनंद ने संरचनावाद शब्द का प्रयोग 1920-1930 के अंतिम काल के दौरान प्रकाशित अपनी पुस्तकों में प्रयोग करना आरंभ किया था। फरदीनंद सॉसर का मानना है कि वक्ता के व्यक्तिगत रूप से संज्ञान में आये अदृश्य नियमों के अनुसार भाषा निर्मित होती है, परन्तु वक्ता स्वयं उसकी व्याख्या करने में प्रायः असमर्थ रहते हैं।

इस प्रकार सभी स्थानिक वक्ता की भाषा को पूरे अधिकार के साथ बोलती हैं, वे यह भी जानते है कि उस भाषा को बोलने का सही तरीका क्या है वे व्याकरण पर पूर्ण अधिकार रखे बिना भी वक्ता की गलती पकड़ सकते हैं, और उसमें संशोधन कर सकते हैं यह सब वे तब कर पाते हैं जबकि वे भाषा की संरचनाओं के बारे में कुछ भी नहीं जानते। यह काम भाषा विशेषज्ञों व विश्लेषकों का है। इस प्रकार भाषा बोलने वाला भाषा के बारे में विशेष ज्ञान प्राप्त किये बिना अनजाने में ही उसे सही रूप में बोलने में सफल रहता है। यही बात

संस्कृति के बारे में लागू होती है। जो लोग सांस्कृतिक मूल्यों परम्पराओं का पालन करते हैं, वे वह सब बड़ी सरलता से करते रहते हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि ऐसा करने के पीछे कारण क्या होते हैं। क्योंकि सांस्कृतिक व्यवहार के पीछे जो व्याकरण होते हैं वे अंदर छिपे रहते हैं। मानव-विज्ञान विशेषज्ञ मनुष्यों के अंदर गहराई में छिपे उन कारणों, नियमों तथा प्रवृत्तियों का अध्ययन व विश्लेषण करते हैं जो मनुष्यों के सांस्कृतिक व्यवहारों के लिए जिम्मेदार होते है।

लैवी स्ट्रॉस ने फ्रांसीसी समाजशास्त्र के विद्धान अपने पूर्ववर्ती समाजशास्त्रियों एमिली दर्खाइम तथा मार्शल मॉस से भी प्रेरित था। रूसी संरचनावादी भाषा विज्ञानी रोमन जेकब्सन, ने न्यूयार्क के 'न्यू स्कूल' में लैवी स्ट्रॉस के साथ काम किया था। इस स्कूल में लैवी स्ट्रॉस ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शिक्षण कार्य किया था। जेकब्सन प्राग-स्कूल (Prgue school) से जुड़ा था तथा लैवी स्ट्रॉस ने अपनी द्विधारी पद्धति की अवधारणा स्वयं अपने काम से विकसित की थी। द्विधारी पद्धति के अनुसार मनुष्य का मस्तिष्क किसी चीज को विरोध या तुलना के आधार पर समझता है। जैसे अंधकार के ठीक विपरीत अवस्था प्रकाश कहलाती है जैसे जीवन मृत्यु की' तीव्रता, धीमेपन की विपरीत अवस्था होती है। दुनिया में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसका विपरीत मौजूद न हो। कोई ऐसी अवस्था नहीं है जिसकी विपरीत अवस्था नहीं। लैवी स्ट्रॉस ने हीगल के द्वंद्वात्मक सिद्धांत ग्रहण किया जो उनके मिथक व कहानियों के विश्लेषणात्मक में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। मिथक जैसे सांस्कृतिक तत्व को समझने के लिए इसे इसके घटकों में तोड़ना होगा और फिर इन घटकों को उलटे द्विधारी पद्धति से उलटे क्रम में लगाकर पढ़ना होगा। अगले में हम मिथक के विश्लेषण के बारे में पढ़ेंगे। यहाँ सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि लैवी स्ट्रॉस ने दावे के साथ कहा है कि किसी भी संस्कृति का समग्र अध्ययन किये बिना भी उसका अथवा उसे किसी घटक का विश्लेषण किया जा सकता है। लैवी स्ट्रॉस का यह अभिकथन सबसे ज्यादा चर्चित तथा समग्रता वाले संरचनात्मक अभिक्रियावादियों के सिद्धांतों के ठीक विपरीत है। उसके अनुसार संस्कृति के किसी भी घटक का कार्य समूची संस्कृति के चरित्र का प्रतिनिधित्व करना अथवा सामाजिक अखंडता में योगदान देना मात्र होता अपितु मानव समाज को एक संदेश देना होता है। यह संदेश उस संस्कृति विशेष का अंग भाग नहीं होता है अपितु यह अस्तित्व मानव जातिक के संदर्भ में होता है। इन संदेशों का सृजन मानव-मस्तिष्क को अपने चारों और फैले मानव-समाज को, पूरे विश्व को समझने के लिए किया जाता है जिसका मनुष्य के लिये केवल एक मार्ग है वो विरोध उत्पन्न करके ही संभव है, जो विरोधी के आधार तैयार कर रहे है।

इस प्रकार संरचनावाद सामान्यी कारण का प्रयास करता है। संरचनावाद का उपयोग अलग-थलग पड़ी संस्कृतियों द्वारा किया गया है। इसे तुलनात्मक शैली में इस्तेमाल किया जाता रहा है। इस प्रकार तुलना करने की वैज्ञानिक प्रविधि जिससे किसी वस्तु या संदर्भ को सही सही समझा जा सकता है। लैवी स्ट्रॉस के संरचनावाद के केंद्र में अवस्थित है।

बोध प्रश्न

1) लैवी स्ट्रॉस के संरचनावाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) लैवी स्ट्रॉस के संरचनावाद पर पड़े प्रमुख प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) संरचनावादी अभिक्रियात्मक सिद्धांत से लैवी स्ट्रॉस का संरचनावाद किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

3.3 लैवी स्ट्रॉस की सांस्कृतिक अवधारणा

लैवी स्ट्रॉस के अनुसार संस्कृति सम्पर्क का माध्यम है, उस उद्देश्य को अभिव्यक्ति है जो आदान-प्रदान के जरिए पूरे समाज को बांध कर रखती हैं। सभी मिथक, लोक-कथाएँ, लोक गीत, तथा रीति-रिवाज व मान्यताएँ जो मिलकर संस्कृति का निर्माण करते हैं, वे इसी उद्देश्य की अभिव्यक्ति के वाहक होते हैं। (बरीज, 1963 : 98)

अपने संरचनावाद में लैवी स्ट्रॉस ने सम्बंधों को संरचना तथा मनोविज्ञान, मानव मस्तिष्क की संरचना का सटीक प्रत्युत्तर दिया है। उसके अनुसार मानव मस्तिष्क संस्कृति के उन तत्वों में प्रतिबिम्बित तथा प्रयुक्त होता है जो आदान-प्रदान के माध्यम से समाज को थामे रहते हैं। 1963 के आस-पास लैवी स्ट्रॉस ने संस्कृति के मूल बिन्दु की, विशेषरूप से प्रकृति दवारा संस्कृति तक पहुँचाये जाने वाले आशय की तलाश की और पाया था कि मानव समाज में विवाह करने की सांस्कृतिक प्रवृति के पीछे स्त्री और पुरुष का शारीरिक मिलन होता है जिसमें प्रकृति का अपनी नस्ल को आगे बढ़ाने का उद्देश्य छिपा होता हैं

लैवी स्ट्रॉस के अनुसार विवाह मनुष्यों के बीच आदान-प्रदान की आधारभूत परम्परा विवाह है। विवाह के उद्देश्य से समाज में स्त्रियों के आदान-प्रदान अथवा अदला-बदली की प्रथा समाज के विभिन्न समूहों के बीच सम्बंधों की मजबूती को बनाये रखती है। परन्तु ये विभिन्न मानव समूह आखिर कैसे निर्मित होते है? सरलतम समाजों में मनुष्यों की अपने घर की बेटियों के लिए दूसरे लोगों के बीच दूल्हा तलाश करने की प्रवृति काम करती है। इस प्रकार सभा बेटियाँ देने वाले और बेटियाँ स्वीकार करने वाले विविध सामाजिक समूह आकार ग्रहण कर लेते हैं और उनके बीच सम्बंध प्रगाढ़ होते चले जाते हैं। समान गोत्र में विवाह करने से बचने के पीछे जो मनोवैज्ञानिक व प्राकृतिक तर्क दिये जाते हैं, लैवी स्ट्रॉस का मानना है कि ऐसी मान्यताओं के पीछे एक ऐसी सांस्कृतिक रणनीति न्याय करती है जो समाज को बनाये रखने के लिए जरूरत है। सांस्कृतिक घटक भी सामाजिक संरचना का निर्माण करने तथा उसे बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लैवी स्ट्रॉस का कहना है कि सबसे ज्यादा अलग-थलग पड़ी संस्कृति के विचार तथा मान्यताओं की द्विधारी पद्धति के विपरीतता के सिद्धांत के आधार पर व्याख्या की जा सकती है। अपने सुप्रसिद्ध निबंध, 'द बीयर एण्ड द बारबर (1936) में लैवी स्ट्रॉस ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि ऑस्ट्रेलिया की जनजाति 'अबोर्गिन्स' के लोग सीध सादे एक से

स्वभाव वाले जो अब भी शिकार करने और पेट भरने के लिए भोजन सामग्री एकत्रित करने में विश्वास रखते हैं उन्हें टोटमवाद (Totemism) तोले वाद कैसे समझाया जा सकता है? एक संयुक्त समाज में मौजूद जातिप्रथा खेले की विविध बिधियां तथा भारत के नगरों में रहने वाले की नागरिकों की अर्थव्यवस्थता के बारे में कैसे समझाया जा सकता है। लेकिन यदि द्विधारी पद्धति की दोहरी प्रणालियों में से किसी एक के बारे में बताया जाये तो वह उन्हें अपनी अपनी भौतिक संरचना से भिन्न नहीं लगेंगे।

दोनों ही मामलों में, किसी समाज की आधारभूत आवश्यकताएं मनुष्यों के समूहों का निर्माण कर देती हैं जो आपस में अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए आदान-प्रदान करता, एक दूसरे का सहयोग करना आरम्भ कर देते है। मनुष्यों को तब तक आदान-प्रदान की जरूरत नहीं पड़ती जब तक कि वे किसी संस्कृति विशेष के प्रभाव में आ जाने से अपनी अलग पहचान नहीं बना लेते। टोटेमवाद एक विश्वास है जो मानव समूहों को प्राकृतिक गुणा प्रदान करता है जिसके कारण वे आपस में मिलकर रहते हैं। इसी तरह की प्रवृति पक्षियों, जानवरों, जल, वायु तथा बादलों की गर्जन में पाई जाती है।

यद्यपि दुर्खीइम तथा ए आर रैडक्लिफ ब्राऊन ने टोटेमवाद की क्रियात्मक रूप में व्याख्या की है। इन विद्वानों ने इसे सामूहिक चेतना (Collective consciousness) का नाम दिया है। लैवी स्ट्रॉस की व्याख्या इससे बिल्कुल अलग है। लैवी स्ट्रॉस के आधारभूत सिद्धांत के अनुसार संस्कृति संपर्क का तरीका है। अपनी मूलभूत सैद्धान्तिक दायरे में लैवी स्ट्रॉस ने टोटेमवाद के बारे में कहा है कि ''टोटेम एक सुन्दर सोच है।'' जबकि इससे बिल्कुल अलग तरह की व्याख्या करते हुये रैडक्लिफ ब्राऊन ने कहा है - ''टोटेम को आत्मसात करना अच्छा है''। रैडक्लिफ के अनुसार टोटेम उन प्राकृतिक तत्वों के प्रतीक है जिनके सामाजिक मूल्य होते हैं। परन्तु लैवी स्ट्रॉस के अनुसार टोटेम ऐसे वर्ग आधारित लक्षण है जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक समूहों को अलग-अलग पहचाना जा सकता है।

ऑस्ट्रेलिया के अबोरिजिन समाज में सम्बंध गोत्र समाज की ऐसी आधार भूत विशेषताएं हैं जो विभिन्न सामाजिक समूहों को एक दूसरे से पृथक भी करती हैं और गोत्र के बाहर विवाह करने की सांस्कृतिक परम्परा द्वारा विभिन्न सामाजिक समूहों को एक दूसरे से बांधे भी रहती हैं। ऐसा माना जाता है कि एक गोत्र के सभी लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही पूर्वज से जन्में हैं। इसी कारण उनके बीच रक्त सम्बंध है, अतः वे आपस में विवाह नहीं कर सकते। आस्ट्रेलिया के अबोजिन समाज में सब एक जैसे हैं। आयु तथा लिंग के आधार पर उन्हें अलग-अलग करके देखा जा सकता है। इनमें विभिन्न गोत्रों या वंशों के समूह एक साथ रहते हैं। वे सब अपने आपको एक ही पूर्वज की संतान मानते हैं। इसलिए उनके गुण व स्वभाव एक जैसे हैं।

इस प्रकार प्रकृति गत विभिन्नताएं विभिन्न मानव समूहों को अलग-अलग पहचान देती है। मनुष्यों की प्रकृतियों के अन्तर मनुष्यों को खास पहचान प्रदान करते हैं। इनके आधार पर उन्हें अलग-अलग पहचाना जा सकता हैं अलग-अलग प्रकृतियों वाले मानव समूहों को उनके तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर अलग-अलग करके देखा जाता हैं। उड़ने वाले जीवधारी जमीन पर रहने वाले जीवधारियों से अलग होते हैं। मांसाहारी शाकाहारियों से अलग होते हैं। जलीय जीव अग्निजीवों से अलग तरह के होते हैं।

इस प्रकार सांस्कृतिक पृथकता मनुष्यों की प्रकृतिगत विभिन्नताओं से जन्म लेती है। स्त्रियों में कुछ ऐसी विशेषताएं होती हैं जिनके कारण वे पुरुषों से बहुत अलग होती है और अपनी इन्हीं विशेषताओं से वे ऐसी क्षमता प्राप्त करती है कि जहाँ जन्म लेती और पलती बढ़ती है वहां से विवाह के लिए उन्हें अलग हटना पड़ता है और दूसरे गोत्र के समाज में जाना

पड़ता है। वे इस प्रकार के दो विभिन्न समाजों या सामाजिक समूहों या समुदायों के बीच सम्बंध सूत्र बन जाती है जो इन्हें सामाजिक बंधन में बांधे रखते हैं।

जिन समाजों में विभिन्न जातियों के लोग एक साथ रहते हैं उनमें मानव-समूहों के बीच सम्बंधों में जटिलताएं आ जाती हैं। ये सांस्कृतिक विभाजन से उजागर होती हैं, जैसे मजदूरी करने वाले लोगों के अलग समूह बन जाते हैं और दूसरी ओर उन लोगों के समूहो बन जाते हैं जो मजदूरी करवाने के लिए इन पर आश्रित हो जाते हैं। स्त्रियों की बीच प्राकृतिक समानता सांस्कृतिक विविधताओं के कारण व्यर्थ हो जाती है। जातीय पहचाने उन्हें भी अपने दायरों में खींच लेते है। इस प्रकार जातीय समूह अपना अलग स्थान बना लेते हैं और ऐसी स्थिति में स्त्रियों की पहचान उनकी प्रकृति से नहीं जा जाती अब वे सांस्कृतिक विविधताओं के आधार पर पहचानी जाती है। हर जाति की संस्कृति अलग-अलग होती है। कार्य के आधार पर बनने वाले मानव समूहों में रहने वाली स्त्रियों की पहचान कामों के आधार पर सुनिश्चित होने लगती है और सामाजिक सम्बंधों को सुदृढ़ बनाने का दायित्व सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों पर आ जाता है।

इस प्रकार लैवी स्ट्रॉस के अनुसार टोटेमवाद तथा जातिवाद दोनों का एक सा उद्देश्य होता है - मानव समूहों के बीच अंतरों व विरोधी को चिन्हित करना। ऐसी स्थिति में स्त्रियों का आदान-प्रदान गोत्रों के आधार पर होता रहता है और सेवाओं का जातीय अथवा कार्य-समूहों के आधार पर दोनों मामलों में सांस्कृतिक पहचाने अंतर पैदा करती हैं और वे अलग-अलग या विरोधी लगने लगते है, जबकि प्राकृतिक रूप से वे एक जैसे ही होते है। अंतः संस्कृति को अलगाव कारी माना जाता है। संस्कृति मस्तिष्क को संदेश भेजते है, जीवन-शैली या व्यवहार पद्धति नहीं। इस प्रकार संस्कृति को इस तरह से समझने का महत्व यह है कि इस तरह से संस्कृति के मिथकीय संदर्भ को एक तरफ हटा देता है और संस्कृति की संरचना पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित कर उसकी व्याख्या करता है और निष्कर्ष यह निकलता है कि सभी संस्कृतियों की संरचना एक जैसी ही है।

3.4 मिथकों का संरचनावाद विश्लेषण

लैवी स्ट्रॉस (1963) के अनुसार मिथकों की अपनी महत्व पूरी भूमि का होती है। वास्तविक जीवन में जो अंत विरोध होते हैं, मिथक उन्हें ढकने का काम करते हैं। यदि किसी मिथक को हमें सही अर्थों में समझना होता है तो हमें उसके समस्त घटकों को अलग-अलग करके देखना होगा। द्विधारी पद्धति की विपरीतता की अवधारण के सहयोग से इन घटकों को समझा जा सकता है। मिथक की संरचना को तोड़ने के बाद उसके घटकों को एक निश्चित क्रम में लगाया जाता है और फिर उनका विश्लेषण किया जाता है। मिथक की संरचना उसे एक स्वरूप प्रदान करती है तथा उसकी विस्तृत व्याख्या व विश्लेषण से प्राप्त तथा उसके संदर्भ को दर्शाते हैं।

उसी प्रकार व्यवहार का एक वह स्वरूप होता है जो दिखता है और दूसरा वह होता है जो वास्तविक है। उदाहरण के लिये 'त्याग' एक प्रकार का व्यवहार है और यदि मालूम करना हो कि त्याग किस संदर्भ में किया गया है तो उसका मानव विज्ञान के आधार पर विश्लेषण करना पड़ेगा, अनेक प्रश्नवाचक शब्द जैसे कौन, कहां, क्यों, कैसे लगाने पड़ेंगे तब कहीं जाकर इस व्यवहार के पीछे की सच्चाई सामने आयेगी। लेकिन जब किसी मिथक का विश्लेषण किया जाता है तो वह केवल उसकी संरचना से संबंध रखता है, न कि संदर्भ से। इस प्रकार यदि हम किसी मिथक का विश्लेषण करें तो त्याग उसका एक तत्व मात्र होगा। इसका मिथकीय रीति-रिवाज से कुछ लेना-देना नहीं। यदि मिथकों को उनके आधारभूत तत्वों में तोड़ कर देखा जाये तो ज्यादातर मिथक एक जैसे ही होंगे। इस प्रकार किसी

मिथक अथवा कथा का आधार उसकी संरचना होती है जिसमें अनेक प्रकार की जटिलतायें और रहस्य छिपे हो सकते हैं और मिथक का अन्तिम घटक वह अग्रगामी संदेश होता है जिसे संपर्क में आने वाले लोगों द्वारा समझा जाता है और आगे बढ़ा दिया जाता है। जब किसी कहानी को उसमें निहित उद्देश्य अथवा संदेश के आधार पर उसे और आगे ले जाये जाने की संभावना समाप्त हो जाती है तो वहीं पर उस कहानी का अंत हो जाता है। यह तथ्य बहुत कुछ 'हीगल' की सोच के निकट है। काल मार्क्स की सोच के निकट नहीं हैं। 'हीगल' के अनुसार ही एक सिद्धान्त में से उसकी तोड़ करने वाला प्रति सिद्धान्त निकलता है और वो उसे तीसरी अवस्था की ओर ले जाता है जिसे 'समन्वय' कहते हैं।

'लैवी स्ट्रॉस' ने अनेकों मिथकों का विश्लेषण किया उसमें से एज़्डीवाल (Asdiwal) नामक मिथक का विश्लेषण बहुत चर्चित हुआ है। इसके अनुसार किसी मिथक को विपरीत श्रेणियों में तोड़ा जाता है और इसके बाद उनकी दूसरे मिथकों से तुलना की जाती है। 'लैवी स्ट्रॉस' यह मानकर चलता है कि मनुष्य का मस्तिष्क सीमित संरचना पद्धतियों को ही पहचानता है क्योंकि मस्तिष्क की अनुभव करने की क्षमता सीमित होती है। इस प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क के समझने के दो आधार होते हैं। एक आधार होता है अनुरूपता, और दूसरा होता है प्रतिरूपता। अतः यदि हम किसी चीज को समझना चाहें तो उसे तुलनात्मक कसौटी पर कसते हैं और फिर उसे चातो समानता के आधार पर समझते हैं या विरोध के आधार पर। इस प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क में समझने की क्षमता कुछ आधारों पर निर्भर करती है और ये आधार किसी नियम विशेष के आधार पर अपने संदेश छोड़ते हैं। इसी आधार पर ''लैवी स्ट्रॉस' ने अनेक मिथकों का विश्लेषण किया है जिससे यह पता लगता है कि एक मिथक अन्य मिथकों से संरचना के आधार पर मिलता जुलता होता है और वह एक निश्चित प्रक्रिया के द्वारा अपना संदेश प्रेषित करता है।

'लैवी स्ट्रॉस' ने इस प्रक्रिया को परिवर्तन के नियमों के अंतर्गत घटित होने वाली माना है। 'कैरोल' (1977) ने 'लैवी स्ट्रॉस' के परिवर्तनों के नियमों की जटिलता को सरल करते हुए दो प्रकार के नियमों का उल्लेख किया है।

परिवर्तन का पहला नियम : परिवर्तन दो व्यक्तियों की भूमिकाओं के बीच होता है जिन्हें X और Y कह सकते हैं यह दोनों एक दूसरे से एक खास संदर्भ में जुड़े होते हैं।

1) अ) : हर भूमिका के परिणाम को अस्वीकार करना

1) ब) : मूलरूप से एक व्यक्ति को किसी एक भूमिका में भेजना X की भूमिका में Y हो और Y की भूमिका में X हो

परिवर्तन का दूसरा नियम : विभिन्न घटनाओं के परिणाम पर नजर डाल और हर चलता के परिणाम को अमान्यकर दें तथा घटनाओं को उल्टे क्रम में लगाकर देखें।

कैरोल सहित अन्य अनेक विद्वानों ने बाइबिल में दिये गये सृष्टि क्रम के वर्णन का हवाला दिया है।

बाइविल के मिथक का विश्लेषण (mytus from chistian Bible) अपनी पुस्तकों 'गार्डन ऑफ ईडन' (1961) में लेवी-स्ट्रास ने तथा 'जैनेसिज एटरूमिथ माइथ' (1962) में एडमंड लीच ने दिया है।

लीच ने इस मिथक का विश्लेषण करते समय औपोजीशन (opposition) तथा मीडिएशन (mediation) शब्दों का इस्तेमाल उसी अर्थ में किया है जिस अर्थ में लैवी स्ट्रॉस (1963) ने किया है। विपरीतता शब्द का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया गया है मनुष्य के

मस्तिष्क में धारणा को दो विपरीत श्रेणियाँ मौजूद रहती हैं। इन दोनों श्रेणियों के बीच अवधारणात्मक अंतर स्पष्ट दिखता है। समन्वयात्मक श्रेणी वह है जो इन दोनों विपरीत श्रेणियों के बीच जो एक जैसा अंतनिहित है, उसका प्रतिनिधित्व करती है। यह जो समन्वयात्मक श्रेणी है, यह दोनों विपरीत श्रेणियों में मौजूद विपरीतता को मानव-मस्तिष्क में मनोवैज्ञानिक रूप से मौजूद दोनों विपरीत श्रेणियों को एक दूसरे से जोड़ते हुए निरस्त कर देती है।

आइये इज ऑफ जैनेसिज के संदर्भ में समझते हैं। ईसाइयों के विश्वास के अनुसार बाइबिल में वर्णन है कि ईश्वर ने पूरी सृष्टि की रचना छः दिन तक लगातार की और उसके बाद सातवें दिन विश्राम किया। इसी आधार पर ईसाई रविवार को अवकाश का दिन मानते हैं, और उस दिन कोई काम नहीं करते। बाइबिल में इसे सब्बात (sabbath) का दिन कहा गया है। इसके बाद के छः दिनों (जिसे एक सप्ताह माना जाता है) ईश्वर ने सृष्टि को साधे रखने के लिए प्रतिदिन कुछ कामों को अंजाम दिया और उन्हें दायित्व सौंपे।

पहला दिनः धरती में से उसके विपरीत स्वर्ग की रचना की, प्रकाश में से अंधकार की रचना की, रात में से दिन की रचना की तथा प्रातःकाल में से संध्या-काल की रचना की।

इस प्रकार लीच के अनुसार पहले दिन ईश्वर ने जिन विपरीत चीजों की रचना की वे आज तक उसके तरह विपरीत ही बनी हुई हैं। मनुष्य के मस्तिष्क में चीजों की यह विपरीत सदा-सदा के लिए अपना स्थान बना चुकी है।

चौथे दिन ईश्वर ने चंद्रमा तथा सूर्य की रचना की जो एक सुनिश्चित क्रम में गति करते रहते हैं। सूर्य की गति के कारण अंधेरा और प्रकाश बारी-बारी से धरती पर उतरते रहते हैं। वे एक-दूसरे के सदा विपरीत ही रहने वाले हैं। एडमंड लीच के अनुसार स्थायी रूप से रहने वाली विपरीतता जो पहले दिन रची गई, चौथे दिन वह गव्यात्मक विपरीतता में परिवर्तित हो गई। प्रकाश और अंधकार के बीच जैसी विपरीतता तैयार की गई थी, वैसी ही विपरीतता जीवन और मृत्यु के बीच पैदा कर दी गई। ऐसी ही विपरीतता 'ईव' तथा 'एडम' में तथा उत्पादकता तथा अनुत्पादकता में देखने को मिलती है। ईश्वर ने वर्षा के रूप में नभ-मंडल के ऊपर पानी की रचना की तथा नभमंडल के नीचे समुद्र की रचना की। नभमंडल के ऊपर वर्षों के रूप में जिस जल की रचना की गई थी, वह उत्पादकता से सीधा जुड़ा है क्योंकि वर्षों के जल से धरती पर फसलें उगाई जाती हैं, जबकि धरती पर मौजूद सागर का पानी उपजाऊ नहीं होता। इस प्रकार समुद्र अंधकार व मृत्यु की श्रेणी में आते हैं।

ग्रीक मिथक के अनुसार वह स्थान जहां मरने के बाद मृतक जाते हैं समुद्र के नीचे अवस्थित है उसे हैडस (Hades) कहा जाता है। एडमंड लीच नभमंडल को प्रकाश तथा अंधकार के बीच तथा जीवन और मृत्यु के बीच भी उसी तरह मध्यस्थ मानता है जैसे ऊपर के पानी (उत्पादन का प्रतीक) और नीचे के पानी (अनुत्पादन का प्रतीक) के बीच उसे मध्यस्थ माना जाता है।

इसी प्रकार लीच कहता है कि जीवित चीजों की रचना करते समय ईश्वर ने दो तरह के पशु बनाये - पालतू पशु तथा जंगली पशु और साथ ही रेंगने वाले जानवर पालतू जानवरों तथा जंगली जानवरों के बीच मध्यस्थता अथवा समन्वय करने की दृष्टि से बनाये गये थे।

एडमंड लीच ने जो समय का विश्लेषण किया है वह सबसे ज्यादा रूचिकर है। समय का संरचनात्मक विश्लेषण करते हुये लीच न तो उसे किसी दिशा विशेष में जाने वाला (और जाकर वापस न आ पाने वाला) मानता है, न ही गोल-गोल घूमने वाला। उसके अनुसार

समय को एक अंतराल के रूप में समझा जा सकता है, जो एक क्षण तथा दूसरे क्षण के बीच होता है। इस प्रकार पानी की बहती धारा सतत नहीं बह सकते हैं, अपितु वह एक बूंद के बाद दूसरी बूंद के रूप में गतिमान है और इन दोनों बूंदों के बीच का जो अंतराल है, वह समय के रूप में चिहिन्त किया जा सकता है।

ग्रीक में समय के देवता को क्रोनस (Cronous) कहा जाता है। क्रोनस के मिथक का विश्लेषण करते समय लीच ने इसी विश्लेषण पद्धति का इस्तेमाल किया है। रीति-रिवाजों के संरचनात्मक विश्लेषण में, जीवन क्रम रीति-रिवाजों के वार्षिक अनुक्रम दोनों में लोग समय की गति को महसूस कर सकते हैं। मनुष्यों तथा अन्य जीवधारियों में आने वाले परिवर्तन से, वर्ष में आने वाले त्यौहारों के बीतने से हम यह अनुभव कर सकते हैं कि समय गतिमान है। इस प्रकार प्रत्येक रीति-रिवाज समाज का प्रतीकात्मक विपरीत हैं, ठीक उसी तरह जिस तरह सर्कस में विपरीत भूमिकाएं तथा कुछ त्यौहारों जैसे हिन्दुओं के होली के त्यौहार में सामाजिक नियंत्रण के स्वरूप का बदलते जाना। लीच के अनुसार रीति-रिवाजों के बीच अंतराल आते हैं, जैसे तब और अब के बीच, अतीत तथा वर्तमान के बीच अंतराल को या तो रूकावट से चिहिन्हत किया जा सकता है या विपरीतता से।

उत्सव के समय लोग अपने रोजाना के काम को रोक देते हैं और फिर वे ऐसा कुछ करते हैं जो प्रायः रोजमर्रा के जीवन में नहीं करते। ये अंतराल मनुष्यों को समय को बोध कराते हैं और उन्हें रूककर सोचने पर विवश करते हैं।

इस प्रकार लैवी स्ट्रॉस ने सामाजिक विश्लेषण के संदर्भ में संरचनात्मक विश्लेषण का महत्व अपने अनुयायियों को समझाया था, जिन्होंने बड़े पैमाने पर संरचनात्मक विश्लेषण की विधि का विकास किया। एंडमंड लीच ने संरचनात्मक विश्लेषण की पद्धति को विशेष रूप से व्याख्यायित किया। उनके अलावा कुछ अन्य विद्वानों ने भी इसमें योगदान दिया। 1970 व 80 का दशक आते-आते संरचनात्मक विश्लेषण की पद्धति बहुत लोकप्रिय हो गई थी परंतु इसके अगले दशकों में मानव जाति विज्ञान पर सामने आई। नई-नई खोजों की चमक के बीच यह पद्धति धूमिल पड़ने लगी। व्यक्ति निष्ठ विधि तथा प्रतिबिम्बात्मक विधि ने लैवी स्ट्रॉस के संरचनात्मक विश्लेषण को पीछे छोड़ दिया।

बोध प्रश्न

1) 'लैवी स्ट्रॉस' का मिथकों के बारे में संरचनात्मक विश्लेषण क्या हैं? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

2) रूपांतरंण के वे नियम क्या हैं जो एक मिथक को दूसरे मिथक से जोड़ने के लिये प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

3) 'डायमंड लीच' का संरचनात्मक विश्लेषण का सिद्धांत उत्पत्ति मिथकों पर किस प्रकार लागू होता है उदाहरण सहित व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

4) 'डायमंड लीच' का संरचनात्मक विश्लेषण का सिद्धांत समय की व्याख्या करने में किस प्रकार लागू होता है।

.....

.....

.....

.....

5) रीति-रिवाजों के संरचनात्मक विश्लेषण में अंतराल की अवधारणा क्या है?

.....

.....

.....

.....

3.5 मानवजाति विज्ञान तथा संरचनात्मक विश्लेषण

संरचनात्मक विश्लेषण का एक पक्ष अपेक्षाकृत कुछ कम स्पष्ट हुआ है और वो यह है कि मानवविज्ञान का विश्लेषण में क्या योगदान रहा। 'लैवी स्ट्रॉर्स' ने अधिकतर इस पर अधिक जोर दिया है, खासकर तब जब उसने सामाजिक संरचना की अवधारणा को आगे बढ़ाया है। रेडक्लिफ ब्राउन को सामाजिक संरचना की अवधारणा से अलग 'लैवी स्ट्रॉर्स' सामाजिक संरचना को एक प्रतिमान मानता है (1953)। 'लैवी स्ट्रॉर्स' के अनुसार प्रतिमान दो तरह के होते हैं।

1) मैकेनिकल यान्त्रिक प्रतिमान (Mechanical Model)

2) संख्यात्मक प्रतिमान (Statistical Model)

ये दोनों प्रतिमान वास्तविक आंकड़ों के आधार पर एक दूसरे से भिन्न होते हैं। 'लैवी स्ट्रॉर्स' के अनुसार यदि प्रतिमान उसी स्तर का होता है जैसे कि क्षेत्रीय आंकड़े बताते हैं तो हम कह सकते हैं कि वह एक मैकेनिकल प्रतिमान है और यदि उनमें अंतर पाया जाता है तो वह संख्यात्मक प्रतिमान माना जायेगा। उदाहरण के लिये समाज में विवाह के मामले में एक नियम होता है और उम्मीद की जाती है कि हर कोई उसका पालन करेगा। यदि पूरा समाज वास्तव में विवाह के स्वीकृत नियम का पालन कर रहा है तो उस समाज की सामाजिक संरचना मैकेनिकल मानी जायेगी और यदि समाज में आये कुछ परिवर्तनों के कारण जिनमें शिक्षा तथा बाजार आधारित अर्थव्यवस्था शामिल है, ऐसी स्थिति में कई बार समाज के कुछ लोग विवाह के उस नियम का पालन नहीं करते और अपनी बेटी के विवाह के लिये दूल्हा तलाश करने के लिये कोई और तरीका अपनाते हैं तो वे विवाह के स्वीकृत नियम का त्याग कर देते हैं। यदि किसी समाज में मामा की बेटी से विवाह करने का रिवाज कुछ लोगों द्वारा

छोड़ दिया जाता है तो वह प्रतिमान मैकेनिकल नहीं कहलायेगा। तब यह पता लगाना होगा कि कितने लोग समाज में स्वीकृत नियमों के अनुसार शादियां कर रहे हैं और कितने उसका उल्लंघन करते हुए अन्य तरह से शादियां कर रहे हैं। ऐसे में समाज का प्रतिमान संख्यात्मक माना जायेगा।

दूसरे उदाहरण में हम ऐसे समाज को ले सकते है जहां विवाह करने का कोई खास नियम है ही नहीं जैसे कि अमेरिका में। यदि अमेरिका जैसे देश में संख्यात्मक विश्लेषण किया जाय तो पता लगेगा कि वहां पसंद के नियमों का लोग ज्यादा पालन कर रहे हैं जैसे कि वे एक ही जाति अथवा एक ही वर्ग में विवाह करने के लिये बाध्य नहीं हैं। इस प्रकार यदि किसी समाज में विवाह के मामले में स्वीकृत नियम लागू नहीं होते हैं तो वहां संख्यात्मक नियम स्वतः ही चलन में आ जाते हैं इस प्रकार मानव जाति विज्ञान का सामाजिक संरचना को समझने में विशेष योगदान रहता है।

मिथकों के संरचनात्मक विश्लेषण में मिथक अथवा कहानियां उसी क्षेत्र से ली जाती हैं परन्तु उनका विश्लेषण करते समय सम्बन्धित लोगों का योगदान जरूरी नहीं होता है। वास्तव में 'लैवी स्ट्रॉर्स' सलाह देता है कि विश्लेषण करने वाला व्यक्ति उस क्षेत्र के व्यक्तियों का हस्तक्षेप स्वीकार न करे क्योंकि ऐसा करने से विश्लेषण का तर्क संगत आधार नष्ट हो जाता है। इस तरह संरचनावाद का झुकाव निगमात्मक विश्लेषण की ओर रहता है, आगमनात्मक विश्लेषण की ओर नहीं।

बोध प्रश्न

1) संरचनात्मक विश्लेषण में मानव जाति विज्ञान का सहयोग लेना आवश्यक है? इस कथन की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मैकेनिकल प्रतिमान और संख्यात्मक प्रतिमान से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर समझाइये।

.....

.....

.....

.....

3.6 समीक्षा

कुछ दिनों तक संरचनावाद छाया रहा, परन्तु बाद में उसकी अनेक कारणों से आलोचना होने लगी। खासकर विश्लेषणों के हस्तक्षेपों तथा उनकी व्याख्याओं पर अनेक प्रकार से भौंहें तनी।

लैट के अनुसार (1987 : 103) - ''क्योंकि संरचनात्मक विश्लेषण विश्लेषण करने वाले के दृष्टिकोण पर अधिक आश्रित रहता था, इसलिए इस बात की संभावना ज्यादा रहती थी कि दो व्यक्तियों के निष्कर्ष एक जैसे न हों। उदाहरण के लिए डायमंड लीच के सृष्टि या

उत्पत्ति की व्याख्या पर माइकल कैरल की समीक्षा को लें तो पता लगता है कि उसने डायमंड लीच पर यह सवाल उठाकर कि उनका यह विश्लेषण कि प्रकाश व दिन जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं और अंधकार तथा रात मृत्यु का, पूरी तरह संतुष्ट नहीं करता, क्योंकि इस विश्लेषण के आधार का विश्वनानीय स्रोत क्या है, उसके बारे में डायमंड लीच ने कहीं जिक्र ही नहीं किया है। संरचनात्मक विश्लेषण के साथ समस्या यह रही कि वह विपरीतता और अनुरूपता पर आधारित रहा।

बाइबिल का उदाहरण देते हुये डायमंड लीच ने अपने विश्लेषण की जो पुष्टि की है, उससे भी कैरोल सहमत नहीं है कैरॉल कहता है कि बाइबिल में ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि रेंगने वाले जानवर पालतू तथा जंगली जानवरों के बीच की कड़ी थे। यदि वे कड़ी रहे होते तो दोनों प्रकार के जानवरों की कुछ समानताएं तो उनमें मौजूद होती। सच तो यह है कि सरीसृप या रेंगने वाले जानवर एक अलग प्रकार के जानवर हैं, उनका श्रेणी पालतू जानवरों तथा जंगली जानवरों से नितांत भिन्न हैं। कैरॉल के अनुसार उत्पत्ति विज्ञान बताता है कि ईश्वर ने तीन प्रकार के जानवरों की रचना की। ये तीनों श्रेणियों एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, इनके बीच किसी के कोई मध्यस्थता नहीं है। उनका मानना है कि ''डायमंड लीच'' ने अपनी द्विधारी पद्धति को उन चीजों पर लागू किया है जिनमें विरोध की प्रवृत्ति थी ही नहीं''। इसी प्रकार उत्पादन को बढ़ावा देने वाली वर्षों जो नभमंडल को ऊपर अवस्थित है, उसके कारण ही धरती पर उत्पादन होता है, और समुद्री जल की उत्पादन में कोई विरोध नहीं होता, डायमंड लीच का यह कथन भी सत्य नहीं है। अनेक कविताओं का यह उल्लेख है कि धरती पर मौजूद जल स्रोत सिंचाई हेतु इस्तेमाल किये जाते हैं तथा उनका जल भी उत्पत्ति सहभोगी है।

धरती पर हरियाली उगाने में धरती के धरती की भूमिका है यदि नभमंडल के नीचे और ऊपर अवस्थित जल की प्रवृत्ति एक दूसरे की विरोधी है ही नहीं तो नभमंडल समन्वयकारी कैसे हुआ? इसी प्रकार एडम और ईव को डायमंड लीच ने उत्पत्ति विरोधी तथा उत्पत्ति सहयोगी करार दिया है, जबकि दोनों एक शरीर है और सृष्टि सहयोगी है। इस प्रकार यह साबित हो जाता है कि सत्य पर तर्क का आरोपणा करके संरचनात्मक विश्लेषण का सिद्धांत लागू किया गया।

माव्रिन हेरिस जैसे भौतिकवादियों ने भी संरचनावाद की आलोचना की है। उनका आरोप है कि संरचनावाद स्पष्ट तथ्यों की अवहेलना करता है तथा अतिवादी व्याख्यायें करता है। उनका मानना है कि 'लैवी स्ट्रॉर्स' ने अमेरिकन मिथकों की व्याख्या करने में चालाकी बरती है धोखाधड़ी की है। उन्होंने 'लैवी स्ट्रॉर्स' को धोखे-बाज बताया है। धोखे-बाज वह होता है जो चालाकी से मिथ्या बाते बताकर लोगों को मूर्ख बनाता है। इसीलिए उसने जानवरों के बीच 'कोयोज' (coyote) जाति के जंगली कुते को घुसाने जैसा काम बताया। कोपोट शाकाहारी तथा मांसीहारी दोनों प्रकार के जानवरों का शिकार करता है। अतः लेवी-स्ट्रास के अनुसार वह समन्वयकत है। वह खेती और शिकार तथा जीवन व मृत्यु दोनों का प्रतीक है। चालाकी करने वाले व्यक्ति की कोई निश्चित जमीन नहीं होती। वह सहज न स्वाभाविक वृत्तियों से हटकर चलता है। उसकी कोई स्पष्ट सोच नहीं होती। किसी तरह अपनी बात को दूसरों को गले उतारने के लिए वह तर्क देता है, हैरिस के अनुसार बेहतर व्याख्या होती कि कोयोज का एक विशेष दर्जा है, क्योंकि वह होशियार और मौका परस्त जानवर है। कई विद्वानों ने रचनात्मक विश्लेषण को भ्रमपूर्ण बताया है।

मॉरिस गोडलिया ने आस्ट्रेलिया की एबोरजिन जन-जाति की विवाह प्रथा के बारे में 'लैवी स्ट्रॉर्स' के विश्लेषण की आलोचना की है। इस पर मार्क्सवादी सोच का प्रभाव है जिसमें रूपांतरण संरचना के विरोधों के आधार पर चिन्हित किया जाता है।

संरचनात्मक विश्लेषण की ऐतिहासिकता की सबसे ज्यादा आलोचना हुई है। इतिहास तथा रूपांतरण में वह अंतर नहीं करता। ज्यादातर विश्लेषण युगों पुराने मिथकों को लेकर किये गये हैं। कुछ ऐसे संस्थानों का भी विश्लेषण किया गया है जो परिवर्तित नहीं होते। उदाहरण के लिए 'लैवी स्ट्रॉर्स' का जातिगत विश्लेषण ज्यादातर श्रमिकों तथा वर्गों के विश्लेषण को अपना विषय बनाते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक सामाजिक ऐतिहासिक तथा राजनैतिक पक्षों को उन्होंने विश्लेषण का विषय नहीं बनाया।

नारीवादियों ने भी 'लैवी स्ट्रॉर्स' की आलोचना की है क्योंकि उसने स्त्रियों को वस्तुओं की तरह आदान-प्रदान किये जाने वाली बताया है। वह यह मानता है कि विवाह हेतु स्त्रियों के आदान-प्रदान से समाजों के बीच सम्बंध स्थायी हो जाते हैं। इसे 'लैवी स्ट्रॉर्स' ने वैश्विक सिद्धांत का हिस्सा तक बताया है।

3.7 सारांश

इस इकाई में हमने संरचनावाद की विस्तार से व्याख्या की है। मिथकों समाज तथा संस्कृति के विश्लेषणों को इसमें समाहित किया गया है। समाजशास्त्र तथा मिथकों के अध्ययन एवं विश्लेषण में संरचनावाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी इकाई में संरचनावाद की आलोचनाओं पर भी प्रकाश डाला गया हैं विशेष रूप से क्लाउडो लैवी स्ट्रॉस के कार्यों की व्याख्या की गई है। लैवी स्ट्रॉस ने टोटेमवाद सम्बंधों, मिथकों तथा संरचना के अंदर मौजूद निहितार्थों पर विस्तार से काम किया है। मनुष्यों का मस्तिष्क कैसे काम करता है इसका विश्लेषण करने में लैवी स्ट्रॉस ने विशेष जांच ली है।

इसका परिणाम यह हुआ कि उसके अनेक समकालीन विद्धानों ने उसका अनुसरण किया तथा अनेक उससे सहमत नहीं दिखे जिन संरचनाओं पर लैवी स्ट्रॉस ने काम किया है, उनमें से ज्यादातर उसकी स्वयं की रचनायें हैं, वास्तव में वे मौजूद नहीं हैं।

ब्रिटेन का मानव-विज्ञानी एडम लीच संरचनावाद तथा क्रियात्मकता के सिद्धांतों से सहमत नहीं था। वह लेवी स्ट्रॉस महत्वाकांक्षा से संचालित मानता था फिर भी एडमंड लीच ने सरंचनावाद से एक बात जरूर सीखी। उसने लोगों के वास्तविक विचारों पर शोध करना वैश्विक मानसिक संरचना पर शोध करने से ज्यादा जरूरी मान।

संरचनावाद अब ऐतिहासिक बन चुका है जो संरचनाएं यह खोजता है वे समय की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। यह सभी कालों के सभी समाजों पर लागू होता है। इसी कारण संरचनावाद की बड़ी तीखी आलोचनाएं हुई हैं। सही पद्धति वह होती है जो देश और काल दोनों पहलुओं को साथ लेकर चलती है।

बोध प्रश्न

1) संरचनात्मक विश्लेषण की प्रमुख आलोचना कौन-कौन सी हैं। उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) संरचनावादी विश्लेषणों के प्रयोग के कौन से वैकल्पिक तरीके विद्वानों ने तलाश किये थे?

.....

.....

.....

.....

3.8 संदर्भ

''लैवी स्ट्रॉस एण्ड मिथ'' इन एडमंड लीच (एड) द स्ट्रक्चरल स्टडी ऑफ मिथ एण्ड टोटेमिज़्म; लंडन : के. ओ. एल. बुरीज़ : रूटलेज़ पेज़ 91-118

''लीच जैनेसिज़ एण्ड स्टक्चरल एनेलाइसेज : ए क्रिंतिकल एवोल्यूशन'' : पी माइकल कैरॉल 1977 : अमेरिकन एथनोलॉजिस्ट पेज़ 663-677

द फाउंडेशन्ज़ ऑफ स्टक्चरलिज़्म ससैक्स : सांइमन कलोर्क, 1981 द हारवैस्टर प्रैस

प्रिमिटिव क्लासीफिकेशन : दुर्खीयम, एमिली, मार्शल मॉस 1963 : यूनोवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, शिकागो

द स्ट्रक्चरल स्टडी ऑफ मिथ एण्ड टोटेमिज़्म : डायमंड लीच, 1967 : रूटलैंज़ लंडन एण्ड न्यूयॉर्क

लैवी स्ट्रॉस इन द गार्डन ऑफ ईडन : एन एक्ज़ामिनेशन ऑफ सम रीसेंट डिवैलपमैंटस इन द एनेसाइसेज़ ऑफ माइथ : एडमंड लीच 1970 : नेल्सन हाईस एण्ड टाना हाईस

द ह्यूमन एक्सपर्टाइज़ : जेमस लैट 1987 वैस्ट न्यू प्रैस, बोल्डर्स

सोशल स्ट्रक्चर इन ए एल क्रोबर एंथ्रोपोलॉजी टुडे : क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस, 1953 : शिकागों यूनीवर्सिटी प्रैस शिकागो (पेज़ 524-553)

''द स्ट्रक्चरल स्टडी ऑफ माइथूस'' : क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस 1955 : द जर्नल ऑफ अमेरिकन फोकलोर वोल्यूम 163 न. 270 (पेज़ 428-444)

द एलीमेंट्री स्ट्रक्चर्स ऑफ फिनशिप क्लाउडो लैवी स्ट्रॉस 1963 : बोकत प्रैस, बोस्टन

द बीयर एण्ड द बारबर : क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस 1963 : जर्नल ऑ द रॉयल एन्थ्रोपॉलोजीकल इंस्टीटयूट ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एण्ड आयर लैंड, 93 : 1-11

स्ट्रक्चरल एंथ्रोपोलोजी, वोल्यूम. 1 क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस : बेसिक बुक्स न्यूयार्क।

द सैवेज़ माइंड : क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस 1966 : यूनीवर्सिटी ऑफ शिकागों प्रैस, शिकागो।

स्ट्रक्चरल एंथ्रोपोलॉजी, वोल्यूम. 11 : क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस 1976 : बेसिक बुक्स : न्यूयार्क।

अन्य संदर्भ

द फाउंडेषन ऑफ स्ट्रक्चरेलिज़्म, ससैक्स : साइमन क्लार्क 1981 द हारवैस्टर प्रैस।

द स्ट्रक्चरल स्टडी ऑफ माइथ एण्ड टोटेमिज़्म : डायमंड लीच 1967 रूटलैज़ न्यूयार्क एण्ड लंडन।

द एलीमेंट्री स्ट्रक्चर्स ऑफ फिनशिप क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस : बीकन प्रैल, बोस्टन।

द सैवेज माइंड : क्लाउडी लैवी स्ट्रॉस 1966 : शिकागों यूनीवर्सिटी प्रैस, शिकागों।

शब्दकोष

फिलोमिना: कोई दृश्य घटना

लेग्यू: भाषा सम्बंधी शब्द जिसे फरदीनंद डी सॉसर ने भाषा सम्बंधी नियम अथवा भाषा की संरचना के लिए इस्तेमाल किया था। संपूर्ण व्याकरण प्रणाली जो किसी विशेष समुदाय द्वारा बोलने में इस्तेमाल की जाती है, उसे लेंग्यू कहा जाता है।

संरचनावादः संपूर्ण विश्लेषण जो भाषाई तकनीक के इस्तेमाल द्वारा उस विधि को समझाने का प्रयास करता है जिससे पूरी बात समझ में आ जाये। इसमें समूचा सम्पर्क एवं सामाजिक व्यवहार समाहित होता है।

टोटेमवादः एक धर्म, जिसमें पशु, पेड़ या अन्य चीज पूज्य माना जाता है और पूरा समुदाय उससे मनवांछित फल प्राप्त करता हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY